भाई-बहन

सत्यवती मलिक

T-1

activity

आपके भी बहन या भाई होंगे जिनके साथ आपकी काफी सारी यादें जुडी होंगी....

आज आपको कक्षा में अपने दोस्तों के साथ इन यादों को बाँटना है...

T-2

प्रस्तावना:

बच्चों इस दुनिया में सबसे सुंदर रिश्ता भाई-बहन का होता है | इस रिश्ते में झगड़ा है... नोंक-झोंक है और सबसे महत्त्वपूर्ण ढेर सारा प्यार है....

कृष्ण-सुभद्रा, कृष्ण-द्रौपदी, यम-यमी और इन जोड़ों के साथ एक और नाम आता है रावण और शूर्पनखा का.. भाई-बहनों के इन पौराणिक जोड़ों को हम जानते हैं....

T-3

भाई-बहन का प्यार सबसे मासूम होता है और चिरकालिक होता है | भारत देश के में इस प्यार के उत्सव को दो बार मनाया जाता है... एक बार राखी पूर्णिमा के दिन तथा दूसरी बार दिवाली के समय..आज की कहानी इसी प्यार को दर्शाने वाली है ... लेखिका सत्यवती मलिक ने बड़ी सुन्दरता तथा मासूमियत से इस काहानी को में घटनाओं का वर्णन किया है |

T-5

यह कहानी निर्मला और उसके भाई कमल की है |

निर्मला अपने भाई को बात-बात पर चिढाती थी, तंग करती थी | इस बात पर वह अपने माँ से डांट भी खाती थी.... पर उसका चिढाना बंद नहीं होता था |

जैसे अपने भाई को गाना गा गाकर चिढाना.. उसके कमीज पर पानी के छींटे डालना.....

निर्मला को कमल ने उसके वस्तुओं को हाथ लगाना अच्छा नहीं लगता था...

और झगड़ा शुरू हो जाता था.......

माँ के डांटने पर निर्मला को दुःख आवश्य होता था.. उसे समझ नहीं आता था कि माँ आखिर डांट क्यों रही है ? अपने भाई को चिढाना, उसके साथ मजाक करना कोई बूरी बात है क्या? यही प्रश्न उसके मन में उठता रहता था ....

गुस्से से बातें करती हुई अपनी माँ की ओर निर्मला आश्चर्य से देखती ही रह जाती थी|

दुखी मन से निर्मला अपने भाई कमल का हाथ थामे स्कूल की ओर निकल पडती थी...

T-6

निर्मला के जाते ही माँ सावित्री को उनके भाई "नरेंद्र" की याद आती थी... उनके झगड़े... रूठना-मनाना....

तब सावित्री को लगता था कि निर्मला और कमल के झगड़े में निर्मला को इस प्रकार डाटना नहीं चाहिए... क्योंकि भाई बहन का झगड़ा प्यार ही होता है...

T-7

माँ के डांटने के बाद भी निर्मला में कोई बदलाव नहीं आया... स्कूल से आते समय भी वह गाना गाकर कमल को चिढाने का अपना कर्तव्य संपूर्ण रूप से निभा रही थी....और गाना था "मन्दाकिनी नीर-पूर्ण धाराएँ" की जगह "कमल की नीर पूर्ण धाराएँ" और "गधा"......

अब माँ को निर्मला पर वाकई गुस्सा आता है, खाना खाते-खाते वह निर्मला को समझाने की कोशिश करती है कि "उसे अपने भाई को इस प्रकार चिढ़ाना नहीं चाहिए , बड़े होने पर अपने भाई की शक्ल देखने के लिए भी तरस जाओगी|" माँ आगे कहती है, "जब मैं तुम्हारे उम्र की थी, तब अपने भाई-बहनों को बिलकुल तकलीफ नहीं देती थी|"

परन्तु यह वाक्य कहते समय माँ को झिझक लग रही थी क्योंकि उन्हें पता था कि वे झूठ कह रही हैं..... बचपन में उन्होंने भी अपने भाई-बहनों को चिढाया था तंग किया था... बचपन का मजा तो इसी में ही है|

माँ को मन ही मन लग रहा था कि अपने बेटी को इस प्रकार डांटकर वे ठीक नहीं कर रही है... पर फिर भी वें उसे आदतन डांट दिया करती थीं|

T-8

उस दिन जुलूस निकलने वाला था| कमल बड़े प्यार से माँ से पूछ बैठा कि क्या वह और निर्मला सीता के घर जुलूस देखने जाए| माँ को इसमें भी निर्मला की ही चाल लगी... उसने झुँझलाकर उत्तर दिया, “जाना हो तो जाओ |”

जुलूस शुरू होते ही माँ का ध्यान भी अनायास जुलूस की ओर आकृष्ट हुआ.....

पर निर्मला ज़ोर-ज़ोर से रो रही थी क्योंकि उसका भाई घर में दिखाई नहीं दे रहा था|

रास्ते पर जुलूस की चहल-पहल थी.. खिलौने, गुब्बारे,पतंग, बाजे और न जाने कितनी वस्तुएँ बाल-मन को आकर्षित कर रहीं थी... पर निर्मला का ध्यान अपने भाई की ओर लगा था| इतनी भीड़ में वह सीता के घर भी भागकर देख आई... पर भाई उधर भी नहीं मिला | रो-रोकर निर्मला का बूरा हाल था |

T-9

माँ सावित्री का भी हृदय अनिष्ट शंकाओं से काँप गया | माँ कमल को अच्छी तरह से जानती थी| वे जानती थी कि कमल एक डरपोक किस्म का लडका है... जो ज्यादा दूर नहीं जा सकता... किसी नौकर का हाथ पकडकर दूर से जुलूस देख रहा होगा |

लेकिन माँ निर्मला को रोता देखकर आश्चर्यचकित हो गई| वह उसे समझाने का उसका रोना समझने का प्रयत्न कर रही थी| उसे समझ नहीं आ रहा था कि निर्मला के कौनसे रूप को वह सच माने, वह रूप जो भाई को चिढाता है, हमेशा उसका मज़ाक उडाता है या वह रूप जो माँ अभी देख रही है ... भाई के लिए बेहाल होकर रोने वाला...... निर्मला के मन में अपने भाई के

लिए इतना प्यार देखकर माँ का मन भी भर आता है | माँ को लगता है कि उसने निर्मला के प्यार को समझा ही नहीं... उसे तो सिर्फ निर्मला का चिढाना ही दिखाई दिया.. माँ होकर उसने अपनी बेटी को गलत समझा|

T-10

कमल डॉक्टर साहब के नौकर के साथ देखने गया था.. जब वह लौट आता है तब निर्मला उसे गले लगाकर कहती है, "पगले! तू कहाँ चला गया था ? गधे! तू क्यों चला गया था?".......

माँ को अपनी गलती का एहसास हो जाता है.. निर्मला को गले लगाकर वह कमल से कहती है, "पता है तुम्हारी बहन तुम्हारे लिए कितना रोई है?"

कमल कहता है कि वह भी रोया था क्योंकि उसे गुब्बारे चाहिए थे.....

कमल की यह बात सुनते ही निर्मला दौड़कर अपने बचाए हुए पैसों से गुब्बारे लाती है... और अपने भैय्या को अपने बाहों में जकड़कर कहती रही, "गधे! तू चला क्यों गया था ?

T-11

उद्देश्य:

लेखिका सत्यवती जी ने इस पाठ में भाई-बहन के प्यार की झलक दो स्तरों पर दिखाया है-

पहला स्तर निर्मला और कमल का प्यार, जो प्यार मासूम है.. जिसमें नोंक-झोंक है....चिढाना है. झगड़ना है..

दूसरा स्तर है सावित्री अर्थात माँ और उसके भाई नरेंद्र का प्यार....इस प्यार में परिपक्वता है.. यह प्यार थोडा भावनिक है.... माँ को अपने भाई की याद आती है.. उनसे मिलने के लिए वे तरसती हैं... अपने भाई के प्रति अपना प्यार जताने के लिए वें उनके के लिए टेबल क्लोथ बन रहीं थीं|

इसीलिए शायद माँ निर्मला को समझ नहीं पाई.. वे निर्मला से बड़ी बहन के व्यवहार की अपेक्षा कर रही थीं.. जबकि निर्मला का प्यार जताने का तरीका लड़ना-झगड़ना है.. इसका मतलब यह नहीं कि वह अपने भाई को नहीं चाहती.....

अक्सर हम देखते हैं कि भाई-बहनों के झगड़े में बड़े भाई-बहन ही डांट खाते हैं... लेकिन यह कहानी स्पष्ट रूप से यह बताती है कि बच्चों के झगड़े में बड़ों को पड़ना ही नहीं चाहिए.... क्योंकि यह झगड़े क्षणिक होते हैं | इसी कारण किसी का पक्ष लेकर हमें दूसरे पर अन्याय नहीं करना चाहिए |

दूसरी बात ऐसे मामलों में माँ-बाप यह क्यों भूल जाते हैं कि वे भी कभी बच्चे थे.. और उन्होंने भी शरारतें की हैं, उन्होंने भी झगड़े किए हैं ? ऐसी घटना शायद उन्हें यह सोचने पर मजबूर कर दें|

बच्चों, ये रिश्ते और बचपन का यह समय बड़ा ही अनमोल होता है... जब हम बड़े हो जाते हैं तब इन्हीं झगड़ों के बारे में सोच-सोचकर हमें हँसी आएगी... यह झगड़े हमारे भविष्य की पूंजी होते हैं.. जिन्हें हमें संभालकर रखना है|

मूल्यांकन